॥ ओ३म् ॥

प्रभु से विनय

हे प्रातःकाल की अग्नि! तू हवि है : तू हव्य पदार्थों को उत्पन्न करने वाली है। तू हमें हव्य पदार्थों का पान करा, जिससे हम देवता बन जाएँ और देवतागणों के समाज में विराजमान होकर देववाणियों को विचारें। हमारी हर स्थान में देवप्रवृत्ति ही बनी रहे। हे परमात्मन! तू कल्याण करने वाला है, हमारे कल्याण के लिए तूने नाना सामग्री उत्पन्न की है। हे प्रभु! हम आपसे कल्याण चाहते हैं।

हे इन्द्र! इस संसार को नियम से बनाने वाले! हमारे जीवन को भी नियमित बना। जब हमारा जीवन नियमित होगा, तो हम कुछ कार्य कर सकेंगे। आपने प्रातःकाल में सूर्य को उत्पन्न किया है। इसी प्रकार हे देव! हम उस महान ज्योति को चाहते हैं जिससे हमारा आत्मिक-कल्याण हो। वह कौन-सी ज्योति है?

वह ज्योति हमारी संध्या की व्याहृतियाँ हैं। जब संध्या की व्याहृतियों को जाना जाता है तो वह संध्या वास्तव में हमारा कल्याण करा देती हैं। जब देवता संध्या के द्वार पर जाते हैं तो संध्या पुकार कर कहती है कि तुम यदि मेरा आदर करोगे, अनुकरण करोगे, तो संसार में देवता बन जाओगे। यदि तुम मुझे ठुकराओगे तो तुम संसार में ठुकराए जाओगे।

अतः संध्या के अनुकरण से मनुष्य का हृदय निर्मल और स्वच्छ बन जाता है और जिस मनुष्य का हृदय निर्मल और स्वच्छ बन गया, उसका वास्तव में कल्याण हो गया।

पूज्यपाद-गुरुदेव

अंक : 528 कुल पृष्ठ संख्या समग्र अंक : 603
वर्ष : 44 44 समग्र वर्ष : 51

अनुक्रम

क्रम संख्या	विषय		पृष्ठ संख्या
1.	प्रभु से विनय	पूज्यपाद-गुरुदेव	3
2.	अनुक्रम		4
3.	ब्राह्मण	पूज्यपाद-गुरुदेव	5-21
4.	ज्ञान-विज्ञान : गणेश लक्ष्मी पूजन	पूज्यपाद-गुरुदेव	22-34
5.	ऋषियों के उद्‌गार		35
6.	Creation, and the Institution of National Order	Pujyapad-Gurudev	36-37
7.	दान, पुस्तकों की सूची व प्राप्ति के स्थान तथा सूचना इत्यादि		38-42

पूज्यपाद गुरुदेव का जन्मोत्सव

परमपिता परमात्मा की असीम अनुकम्पा से पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज, आदि गुरु ब्रह्मा जी के परम प्रिय शिष्य के 74वें जन्मोत्सव के शुभावसर पर दिनाँक 16 सितम्बर से 18 सितम्बर 2016 तक गुरुदेव की कर्मभूमि एवम् निर्माणीत यज्ञीय स्थली लाक्षागृह बरनावा में सामवेद ब्रह्म पारायण महायज्ञ के आयोजन द्वारा प्रति वर्ष की भाँति बड़े हर्षोल्लास के साथ गाँधी धाम समिति (पञ्जी.) के द्वारा मनाया जा रहा है।

अतः आप सभी से नम्र निवेदन है कि योग निष्ठ गुरुदेव द्वारा पुनः से प्रज्वलित इस यज्ञ ज्योति को निरन्तर ऊर्ध्वा में ले जाने के लिए आप अपने परिवार, सगे-सम्बन्धी एवम् मित्रों सहित भाग लेकर आहुति प्रदान करके पुण्य के भागी बनें।

श्री गाँधी धाम समिति (पञ्जी.)

॥ ओ३म् ॥

ब्राह्मण

(ब्रह्म-सूक्त)

जीते रहो!

देखो मुनिवरो! आज हम तुम्हारे समक्ष पूर्व की भाँति कुछ मनोहर वेद मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे। ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से जिन वेद मन्त्रों का पठन पाठन किया। हमारे यहाँ परम्परागतों से ही उस मनोहर वेद वाणी का प्रसारण होता रहता है जिस पवित्र वेद वाणी में उस महामना मेरे देव की महिमा का गुणगान गाया जाता है। क्योंकि जितना भी ये जड़ जगत अथवा चैतन्य जगत हमें दृष्टिपात आ रहा है उस सर्वत्र ब्रह्माण्ड के मूल में प्रायः वो मेरा देव दृष्टिपात आ रहा है क्योंकि हमारे यहाँ हमें दो प्रकार का ये जगत प्रायः दृष्टिपात आता रहता है। एक मानो जड़वत् है तो द्वितीय चैतन्यवत् कहलाया जाता है। मेरे पुत्रो! देखो जड़ का अभिप्राय ये है कि जो शून्य है जिसमें ज्ञान और प्रयत्न नहीं है वे सर्वत्र जगत मानो जड़वत् कहलाया गया। और जिसमें गति है, चेतना है और ज्ञान और प्रयत्न उसके साथ हैं तो बेटा! वे सर्वत्र जगत मानो चैतन्यवत् माना गया। तो दो प्रकार का जगत हमारे यहाँ प्रायः हमें दृष्टिपात आ रहा है एक जड़वत् है तो एक चैतन्यवत् कहलाता है। मेरे पुत्रो! देखो जड़वत् में ये ब्रह्माण्ड मानो अपने में क्रियाशील है। क्योंकि हमारे यहाँ क्रिया भी होते हुए ज्ञान और प्रयत्न नहीं है तो वो भी जगत मानो एक शून्यवत् में माना गया है। और यदि उसमें चेतना, ज्ञान और प्रयत्न है मानो वही जगत हमारे यहाँ चेतना में परणित कहा गया है। तो इसीलिए वह जो परमपिता परमात्मा मेरा देव है वो मानो देखो जड़ जगत और चैतन्य जगत दोनों में ही मानो देखो वो निहित रहता है,

वो उसमें रत्त रहने वाला है। तो इसीलिए हम उस परमपिता परमात्मा की प्रायः महती का गुणगान गाते रहते हैं क्योंकि वे परमपिता परमात्मा अनन्तमयी है। और प्रत्येक वेद मन्त्र मानो देखो उसकी गाथा का वर्णन करता है अथवा उसके गुणों का वर्णन कर रहा है। तो इसीलिए हम उस परमपिता परमात्मा को बेटा! यज्ञोमयी स्वरूप माना जाता है। जितना भी ये संसार रूपी याग चल रहा है मानो उस याग में वो परणित रहने वाला है। वह याग उसका गृह है, उसका सदन है और उसका आयतन है मानो वह उसी में वास करने वाला है।

उपासना

मुनिवरो! हम उस परमपिता परमात्मा की महती के ऊपर प्रायः हमें विचार-विनिमय करना है और विचारना है कि परमपिता परमात्मा ने इस ब्रह्माण्ड की अनन्तमयी रचना की है परन्तु जहाँ हमारा वेद मन्त्र हमें उपासना के लिए बाध्य कर रहा है और यह कहता है कि प्रत्येक मानव को उपासना करनी है। उपासना का अभिप्रायः ये है क्या मानव को अपने जीवन में परमपिता परमात्मा की अनन्तमयी सृष्टि का उपयोग भोग करते हुए और उसमें सदुपयोगिता लानी है मानो उसमें अपने में महान् बनना है। इसीलिए बेटा! जैसे हमारे यहाँ वेद के पठन-पाठन में भिन्न-भिन्न प्रकार के विचार आते रहे हैं।

पृथ्वी

आज का हमारा विचार कहीं मानो देखो पृथ्वी विज्ञान में रत्त हो रहे थे। वेद का मन्त्र कह रहा था प्रथम ब्रह्मा प्रथो सर्वणम् ब्रव्ही व्रतम् पृथ्वीः वेद का वाक् कहता है कि ये पृथ्वी वसुन्धरा है और इसी के गर्भ में बेटा! हम सब विद्यमान रहते हैं मानो हमें ये विचारना है कि ये पृथ्वी हमारी ममत्व को धारण करने वाली वसुन्धरा कहलाती है। इसके ही गर्भ में सर्वत्र विज्ञान पनपता रहा है। सर्वत्र मानो देखो ज्ञान

भी इसी में पनपता रहा है खनिजों के द्वारा मानव उसका उपयोग करता रहता है। तो विचार क्या वेद मन्त्र कहता है ये जो पृथ्वी है ये वसुन्धरा है। इसी के गर्भ में बेटा! हम सब विद्यमान रहते हैं और नाना प्रकार के खाद्य और खनिज पदार्थों को हम प्राप्त करते रहते हैं।

राजा और राष्ट्र का निर्वाचन

मेरे पुत्रो! जहाँ पृथ्वी का वर्णन आ रहा था वहाँ आज के हमारे वेद के पठन-पाठन में राष्ट्रीयता का भी वर्णन आ रहा था। हमारे यहाँ राष्ट्रीयवाद का प्रायः बड़ा वर्णन आता रहता है और राष्ट्रीयवाद में भी भिन्न-भिन्न प्रकार के यागों का चयन और वर्णन आता रहा है। तो विचार, मानो देखो वह व्रतम ब्रह्माः राष्ट्र प्रहे व्रतम वेद का वाक् कहता है कि ये राष्ट्र को कैसा बनना चाहिए राजा कैसा हो? मेरे प्यारे! देखो राजा को निर्वाचन करने वाले कौन हों? तो वेद का एक मन्त्र कहता है ब्रह्मणम् व्रहे वशिष्ठाम् ब्रह्मा वर्चो सम्भवं लोकाम्। बेटा! वेद का मन्त्र ये कहता है कि राजा का निर्वाचन भी होना चाहिए परन्तु वो कैसे बुद्धिमानों के द्वारा? मेरे पुत्रो! देखो वह ब्रह्मवेत्ता हों, निष्पक्ष हों और वेद के मर्म को जानने वाले हों। वेद कहते हैं ज्ञानरूपी प्रकाश को उस प्रकाश में रत्त रहने वाले विवेकी पुरुषों के द्वारा राजा का, राष्ट्र का निर्वाचन होना चाहिए और जब राजा बुद्धिमानों के द्वारा मानो देखो उसका निर्वाचन होता है तो वह राष्ट्र को सुखद पहुँचाता है। राष्ट्र को आनन्दवत् में ले जाता है। तो विचार वेद का आज का हमारा विचार ये कहता है कि हे राजन्! राष्ट्रदम् राष्ट्रम् ब्रह्मे राष्ट्र मानो देखो बुद्धिमानों के द्वारा एक निर्वाचन एक वशिष्ठ निर्वाचित होता है। हमारे यहाँ वैदिक साहित्य में वशिष्ठ नाम राजा को कहा गया है। वशिष्ठ नाम अपने पूर्वजों में जो महान बुद्धिमान है उसे भी वशिष्ठ कहा गया है। और यहाँ वशिष्ठ नाम बेटा! राजा का प्रकरण आ रहा है राजा को वशिष्ठ कहते हैं। मेरे पुत्रो! देखो वह पञ्चजाया पुत्रजायाम् ब्रह्मे

व्रतहाः वेद की एक आख्यायिका कहती है क्या एक मानो देखो एक रत्न है, एक देवी है और उस देवी के पाँच पति कहलाते हैं और पाँच पतियों का ब्रह्मणम् मानो देखो एक वशिष्ठ उनका पुत्र कहलाता है। तो हमारे वैदिक साहित्य में ऐसी-ऐसी आख्यायिका आती रहती हैं। बेटा! वह एक देवी है उस देवी के पाँच पति हैं और पाँचों पतियों का एक पुत्र उस देवी से उत्पन्न होता है जिसका नाम वशिष्ठ कहलाता है। ये वेद का मन्त्र कहता है वशिष्ठाम् ब्रह्मे पञ्चजाया अप्रतम् पुत्रो! समम् ब्रह्मे ब्राह्मण। बेटा! देखो वे कौन होते हैं? वो पञ्च ब्राह्मण होते हैं। वे पाँच ब्राह्मण होते हैं और मानो देखो उनकी देवी कौन है, उन पञ्च ब्राह्मणों की देवी कौन है? बेटा! वह राज सभा कहलाती है। वह राज सभा का नाम मुनिवरो! देवी कहा जाता है और जो वो पञ्च महाब्राह्मण पञ्च विवेकी पुरुष मानो देखो वेद के मर्म को जानने वाले मुनिवरो! देखो एक राजा का निर्वाचन करते हैं उसका नाम वशिष्ठ कहलाता है। हमारे यहाँ वशिष्ठ की विवेचना करते हुए तो बहुत-सी आख्यायिका आती रहती हैं। क्योंकि वशिष्ठ नाम के ऋषि भी हुए हैं और वशिष्ठ नाम यहाँ राजा को, और वशिष्ठ नाम बेटा! सूर्य को भी कहा गया है और वशिष्ठ परमपिता परमात्मा को भी कहा जाता है। परन्तु यहाँ प्रकरण क्या कह रहा है? प्रकरण के आधार पर बेटा! देखो वशिष्ठ नाम हमारे यहाँ वशिष्ठाम् ब्रह्मे व्रतम यहाँ बेटा! राजा का नाम वशिष्ठ है और राजसभा का नाम जिसको राजनीति नितिज्ञ कहते हैं वह बेटा! देखो देवी कहलाती है। और वह जो पञ्च ब्राह्मण विवेकी पुरुष हैं मुनिवरो! देखो वे निर्वाचन करते हैं उसका नाम वशिष्ठ राजा कहा जाता है। वह राजा बेटा! देखो प्रजा को सुखद पहुँचाता है। ब्राह्मणाम् ब्रह्मे यौगिक पुरुषों के आधार पर वो अपने राजसभा का निर्माण करता है, राष्ट्रवाद को ऊँचा बनाता है।

मेरे पुत्रो! देखो विचार-विनिमय क्या वेद का वाक् कहता है, वेद का ऋषि कहता है ये वाक् क्या ब्राह्मणम् ब्रह्मे वशिष्ठाः बेटा! देखो

वह वशिष्ठ कहलाता है। राजा अपने राष्ट्र में मानो देखो ब्रह्मवेत्ता से कहता है कि मेरे राष्ट्र में निर्वाचन होना चाहिए। मेरे प्यारे! देखो निर्वाचन प्रणाली हमारे यहाँ सृष्टि के प्रारम्भ से ले करके वर्तमान के काल तक बेटा! देखो वह प्रणाली मानो वह किसी न किसी रूप में मानो निहित रही है।

इन्द्र

मुनिवरो! देखो जैसे इन्द्र हमारे यहाँ इन्द्र का निर्वाचन होता है। इन्द्रों के भी बहुत से प्रर्यायवाची शब्द हैं क्योंकि इन्द्र नाम परमात्मा का, इन्द्र नाम राजा का है, और उस राजा का नाम इन्द्र कहलाता है जितने पृथ्वी पर धिराज अथवा राजा होते हैं उन सबका स्वामित्व करने वाला बेटा! उसे इन्द्र कहते हैं। इसलिए उसे देवता का देव इन्द्र कहते हैं क्योंकि वो देववृत्तियों में रत्त रहता है। मेरे पुत्रो! हमारे यहाँ सतोयुग के काल में एक निर्वाचन प्रणाली बनी इस प्रणाली का नामोकरण इन्द्र कहते थे। मेरे पुत्रो! देखो वो जो एक सौ एक अश्वमेध यज्ञ कर लेता है, याग कर लेता है वो मुनिवरो! देखो वह इन्द्र बनता है। हमारे यहाँ ऋषि मुनि उसको इन्द्र की उपाधि प्रदान करते हैं।

अश्वमेध किसे कहते हैं? अश्व नाम राजा का मेध नाम प्रजा को कहा गया है। बेटा! जो राजा और प्रजा दोनो सम्मिलित हो करके राष्ट्र कल्याण के लिए बेटा! याग करते हैं। याग में बेटा! देखो अग्नि होत्र तो आता ही है। याग में शिक्षा प्रणाली भी आती है। याग में ज्ञान और विवेक भी आता है। परन्तु जब राजा के राष्ट्र में याग होने लगता है, राजा स्वतःयाज्ञिक बन जाता है तो बेटा! विवेक भी जागरूक हो ही जाता है। वह अश्वमेध याग–मेरे पुत्रो! देखो अश्व नाम घोड़े को कहा जाता है। अश्व नाम का जो पशु है उसको मानो पुरातन काल में मेरे पुत्रो! देखो स्वर्ण से उसको शृङ्गारित करके और सर्वत्र राष्ट्र में उसे भ्रमण कराया गया और यदि उसको ग्रहण कोई कर लेता है तो

राजा का कर्तव्य है कि उससे वह संग्राम करे या ज्ञान से उसको शिक्षा प्रदान करे या मुनिवरो! देखो ज्ञान और विवेक के द्वारा उसे स्थित कर दे। मेरे पुत्रो! देखो जो ऐसा नहीं कर सकता वह अश्वमेध याग नहीं कर सकता मानो देखो वह राजा अश्वमेध याग करता है और एक सौ एक अश्वमेध याग करने वाला बेटा! इन्द्र कहलाता है। मेरे प्यारे! वो त्रिपुरी का स्वामी कहलाता है और वह स्वामित्व को प्राप्त हो करके वह इन्द्र मानो त्रिपुरी का स्वामी कहलाता है। मेरे प्यारे! देखो जितने राजा हैं उन सर्वत्रता का वो अधिपति कहलाया गया है। तो मुनिवरो! देखो इन्द्र की उपाधि प्राप्त हो गयी। तो इन्द्र कहते हैं जो देवताओं का राजा है। मेरे प्यारे! देवता ही तो याग करते हैं और देवताओं के लिए ही याग किया जाता है। **विचार ये आता है कि देवता ही याग करते हैं और देवताओं के लिए ही याग होता है।** मेरे प्यारे! देखो कैसा विचित्र क्रियाकलाप है।

विष्णु

मेरे पुत्रो! देखो मुझे वो काल पुनः से स्मरण आता रहता है जहाँ भिन्न-भिन्न प्रकार का निर्वाचन होता रहा है। बेटा! हमारे यहाँ एक विष्णु की उपाधि मानी गयी है। विष्णु भवा ब्रह्मणम् ब्रहे विष्णु रुद्रा भागाम्। मेरे प्यारे! देखो वह जो विष्णु है वही तो हमारा कल्याण करने वाला है। हे विष्णु मानो देखो जिस राजा के राष्ट्र में मानो देखो चार प्रकार की नियमावली होती हैं नियमावलियों को हमारे यहाँ भुज कहा जाता है। मेरे पुत्रो! देखो वह विष्णु कहलाता है। हमारे यहाँ मानो देखो चार भुजों वाला विष्णु कौन है? बेटा! सबसे प्रथम सदाचार शिष्टाचार मानो देखो वह राजा के राष्ट्र में होना चाहिए। मेरे पुत्रो! देखो पदम देखो पदम और देखो चक्र अपनी सँस्कृति होनी चाहिए और सँस्कृति के फलस्वरूप मानो शङ्ख ध्वनि होनी चाहिए जो बुद्धिमान राजा के राष्ट्र में मानो ध्वनि से ध्वनित होते हों और वेद मन्त्रों का गान

गाने वाले हों कोई जटापाठ में गा रहा है, कोई घनपाठ में गा रहा है, कोई मानो देखो विसर्ग, उदात्त और अनुदात्त में गा रहा है। तो मुनिवरो! देखो उस राजा का नाम विष्णु कहा गया है जो चार भुजाओं वाला है। चार प्रकार की जो नियमावलियाँ होती हैं। बेटा! देखो सदाचार, शिष्टाचार ये प्रायः होने चाहिएँ। राजा के राष्ट्र में मानो देखो इसी प्रकार की वृत्तियाँ होनी चाहिएँ जिससे बेटा! देखो चक्र, गदा, और मानो देखो पदम उसके यहाँ वृत्तियों में रत्त रहना चाहिए जिससे राजा का राष्ट्र पवित्र बन करके विष्णु की उपाधि को प्राप्त कर सके।

शिव

मेरे प्यारे! हमारे यहाँ एक उपाधि हमारे यहाँ शिव उपाधि कही गई है। शिव नाम बेटा! यहाँ परमपिता परमात्मा को भी कहते हैं। शिव नाम आत्मा का भी है। वैदिक साहित्य में बेटा! शिव नाम उस राजा को कहते हैं जिस राजा के राष्ट्र में मानो जैसे हिमालय बहुत ऊर्ध्वा में गति करता है बहुत ऊर्ध्वा में रहता है मानो इसी प्रकार राजा के राष्ट्र में प्रजा इस प्रकार के ऊर्ध्वा में विचारों वाली हो जिन विचारों को ले करके हम अपने में देखो वह अपनी वृत्तियों को अपना करके मेरे पुत्रो! देखो वह शिवा ब्रह्मणम् ब्रहे मानो देखो जैसे हमारे यहाँ शिव उपाधि मानी गयी है जो राजसभा में बेटा! देखो न्याय ऊँचा हो और न्याय में कुशलता हो। जिस राजा के राष्ट्र में वो मानव और विचारों और ऊँचे विचारों वाली प्रजा हो और न्याय पवित्र हो तो मानो देखो उस राजा का नाम शिव कहा जाता है, वह शिव राजा है। तो बेटा! ये सब उपाधियाँ कही गई हैं।

ब्रह्म

देखो, एक ब्रह्म उपाधि होती है। ब्रह्म उपाधि उसे कहते हैं जो मेरे प्यारे! देखो वह प्रातःकालीन ब्रह्म का चिन्तन करता है और ब्रह्म

का चिन्तन करता हुआ मेरे प्यारे! वो अपने में रत्त हो जाते हैं। जैसे मुझे स्मरण आता रहता है बेटा! देखो एक समय महर्षि भृगु मुनि महाराज मेरे पुत्रो! देखो एक समय महर्षि भृगु महाराजा शिव के आश्रम में पहुँचे। मानो देखो शिव के आश्रम से भ्रमण करते हुए वे ब्रह्म के मानो ब्रह्मा के आश्रम में पहुँचे। बेटा! जब ब्रह्मा जी ने दृष्टिपात किया कि महर्षि भृगु मुनि का आगमन हो रहा है। तो मानो देखो उनकी ब्रह्माणी ने और ब्रह्मा जी ने दोनों ने उनका स्वागत किया और वे मानो देखो विराजमान हो गए। देखो ब्रह्मा बोले कहो भगवन् आज किस प्रकार भृगु तुम्हारा आगमन हुआ है? महर्षि भृगु बोले कि प्रभु! मैं आज वेद का अध्ययन कर रहा था और अध्ययन करता हुआ मुझे मानो देखो ब्रह्म के कुछ सूक्त मुझे स्मरण आए। तो वे **ब्रह्म सूक्त किसे कहते हैं?** मेरे प्यारे! ब्रह्मा जी ने कहा कि ब्रह्म सूक्त तो मानो सूक्त जो ब्रह्म का वर्णन करते हैं, जो ब्रह्म की गाथा गाते हों। जैसे माता का पुत्र माता के, माता के पुत्र ब्रह्मे माता का वर्णन करते रहते हैं क्योंकि यदि माता के पुत्र नहीं होगा तो माता का वर्णन नहीं किया जाता। ममत्त्व को वो प्राप्त नहीं होती। तो इसी प्रकार मानो देखो ब्रह्म सूक्त कहलाते हैं। वह जो ब्रह्म सूक्त हैं मानो वे ब्रह्मा के सम्बन्धी हैं ब्रह्म का चिन्तन करने के लिए तत्पर हैं मानो देखो ब्रह्म का वर्णन करने वाले ब्रह्म का बखान करते रहते हैं। मेरे प्यारे! देखो ऋषि ने जब इस प्रकार अपनी युक्तियाँ प्रगृह प्रहे महात्मा भृगु बोले कि प्रभु! मैं ब्रह्म को जानना चाहता हूँ कि ब्रह्मा किसे कहते हैं? मुनिवरो! ब्रह्मा जी ने कहा क्या ब्रह्म नाम तो आत्मा का है और आत्म ज्ञान में जब प्रवेश हो जाता है जब आत्मा में प्रभु का भान हो जाता है तो उस आत्मा का नाम ब्रह्मा कहते हैं, ब्रह्म कहते हैं। मानो देखो वेदों के मर्म को जानने वाले का नाम देखो ब्रह्म कहा जाता है। मेरे प्यारे! देखो पुनः महात्मा भृगु ने कहा प्रभु ये ब्रह्मा कौन है? उन्होंने कहा ब्रह्मा वह है जो मानो देखो उत्पत्ति के मूल में विद्यमान रहता है, उत्पत्ति के मूल

में ही तो ब्रह्मा रहते हैं। उसी प्रकार और उत्पत्ति जब होती है जब ज्ञानयुक्त होता है, ज्ञान से ही उत्पत्ति का मूल बना करता है।

मेरे पुत्रो! देखो जब उन्होंने ये वर्णन किया तो पुनः उन्होंने प्रश्न किया क्या महाराज ये ब्रह्मा कौन है? ये ब्रह्मा अब्रह्मे मैं ब्रह्म को जानना चाहता हूँ ब्रह्म सूक्तों में आया है। उन्होंने कहा ब्रह्मा वह है जो परमात्मा से समन्वय करने वाला हो, जो परमपिता परमात्मा को याग के द्वारा और मानो देखो वाणी, मन, कर्म, वचन के द्वारा जो ऊर्ध्वा में उड़ान उड़ता है। मानो जिसका मन पवित्र होता है, मन कर्म भी पवित्र होता है। मन, कर्म और वचन भी मानो सत में रमण करता रहता है। मेरे प्यारे! देखो मन, कर्म वचन से जो स्थिर रहने वाला है वह ब्रह्म में अपने को दृष्टिपात करता तो बेटा! वो ब्रह्म, वो ब्रह्मा कहलाता है। मेरे प्यारे! देखो उन्होंने कहा ब्रह्मणम् ब्रहे व्रतम मानो देखो ब्रह्म को जो परमात्मा को इस संसार के एक-एक कण-कण में दृष्टिपात करता है। जैसे मन जा रहा है–मन कहीं जाता है तो मानो देखो वह प्रणम्ब्रह्मे मन के जाते ही ये भान हो जाए कि मन चञ्चल हो गया है। तो मानो देखो उसे स्थिर रहने से प्राण में सिमट जाने से मानो देखो ब्रह्म को जगत के मूल में दृष्टिपात करने वाले को ब्रह्मा कहते हैं। मेरे प्यारे! महात्मा भृगु ने पुनः ये प्रश्न किया कि महाराज ये ब्रह्मा कौन है? उन्होंने कहा ब्रह्मा वह है जो माता के गर्भस्थल में जब एक बिन्दु प्रवेश होता है और बिन्दु के प्रवेश होते ही मानो देखो परमाणु अपनी-अपनी जगह पिण्ड के रूप में जो निर्धारित करने वाला है। मानो एक-एक परमाणु देखो नाना परमाणु के साथ में मिलन करता है और वो आत्मा चेतना आत्मचेतना मानो देखो उसमें विद्यमान रहती है और वह जो परमपिता परमात्मा ब्रह्म है वो मानो देखो परमाणुओं को अपनी-अपनी स्थलियों में स्थिर कर देता है। और वे परमाणु अपनी-अपनी जगह स्थिर हो करके बेटा! देखो शिशु का जो निर्माण करने वाला है शिशु को जो निर्माणित करता मानो देखो पञ्च देवताओं

के द्वारा वह नाना देवताओं के द्वारा जो निर्माणित करता है मेरे प्यारे! देखो उसे ब्रह्मा कहते हैं। इसीलिए ब्रह्मा को ही उत्पत्ति के मूल में दृष्टिपात किया गया है।

ब्रह्म सूक्तों से शिक्षा

मेरे प्यारे! उन्होंने कहा प्रभु ये मैंने जान लिया परन्तु इससे मैं सन्तुष्ट हो गया हूँ। मैं जानना पुनः ये चाहता हूँ क्या ये जो ब्रह्म सूक्त हैं ये सूक्त हमें क्या-क्या शिक्षा देते हैं? उन्होंने कहा, ब्रह्मा जी ने कहा क्या देखो ये सूक्त ये कहते हैं क्या ब्रह्म का चिन्तन करो परन्तु देखो अपनी स्थिति में स्थिर हो करके और जीवन की धारा को प्रायः जानने वाले बनो जिससे मानवीयत्व तुम्हारे अन्तर्हृदय में प्रवेश होता हुआ मानो कृतियों में रत्त रह करके अपनी आभा में नियुक्त हो जाता है। तो मेरे प्यारे! देखो ब्रह्मा कौन? मानो देखो जो कण-कण में प्रभु को दृष्टिपात करता है मानो देखो मृत्यु को अपने हृदय से आलिङ्गन वृतियों में रत्त करा देता है तो मानो देखो उसे ब्रह्मा कहते हैं। मेरे प्यारे! महात्मा भृगु बड़े प्रसन्न हुए और महात्मा भृगु ने पुनः ये प्रश्न किया, महात्मा भृगु ने कहा सम्भूति ब्रह्मा सम्भूति लोकाम् सम्भूति रुद्रम भागा वर्णम् ब्रते। मेरे प्यारे! देखो उन्होंने कहा प्रभु मेरा एक ही प्रसङ्ग और रह गया, क्या ये ब्रह्मा कौन है? उन्होंने कहा ब्रह्मा वह कहलाता है जो ब्रह्म ज्ञान का स्वामित्व करने वाला है। ब्रह्म ज्ञान को प्राप्त करा देता है। जो मानो देखो ब्रह्म में समाधिस्थ हो जाता है।

दो प्रकार के साधक

हमारे यहाँ दो प्रकार के साधक माने गए हैं। एक मानो देखो ब्रह्म में समाधिष्ठ, एक तो मानो देखो उस ब्रह्म में समाधिस्थ हो जाना एक मानो द्वितीय मानो देखो जनता में जर्नादन को दृष्टिपात करना है, जनता में ब्रह्म को दृष्टिपात करना है। मेरे प्यारे! देखो उन्होंने कहा

एक ब्रह्म में समाधि है। **ब्रह्म में समाधि उसे कहते हैं** जो सर्वत्र ब्रह्म को ही दृष्टिपात करता है जो मानो देखो ब्रह्म को अपने में और अपने में ब्रह्म में देखो स्वीकार करके उसमें समाहित हो जाता है। और वे मानो देखो वह समाधिष्ठ हो जाता है तो उसको ब्रह्म में समाधि कहते हैं। **मेरे प्यारे! देखो एक जनता में जर्नादन है।** जनता में जर्नादन कौन है? जो मानो देखो जनता में जर्नादन जो जर्नादन में इस संसार में एक-एक कण में ब्रह्म को दृष्टिपात करने वाला वह मानव जब यह विचारता है मैं कहाँ जाऊँ ये तो सर्वत्र ब्रह्म ही ब्रह्म मुझे दृष्टिपात आ रहा है। मानो देखो वह किसी भी दशा में मुझे एक-एक परमाणु में ब्रह्म दृष्टिपात आ रहा है। एक-एक स्थूल जगत में मुझे ब्रह्म ही ब्रह्म दृष्टिपात आ रहा है। जैसे मानो देखो झरना देखो पर्वतों में एक स्त्रोत एक सूत्र मानो देखो जल का स्त्रोत बह रहा है उसमें से ध्वनि आ रही है। वह ध्वनि कहाँ से आ रही है, कौन ध्वनि कर रहा है? तो कहता है प्राणाम् ब्रह्मा प्राणम् रुद्रे वह जो प्राण है वह ब्रह्म के रूप में मानो देखो ध्वनि कर रहा है। एक-दूसरे से मिलान करता हुआ ध्वनित हो रहा है। वह ध्वनि ही मानो देखो ब्रह्म में समाधिष्ठ होने की है। वह जनता में जर्नादन में ही ब्रह्म में ब्रह्मा मानो देखो समाधिष्ठ हो जाता है। निर्कल्प समाधि लग जाती है। बेटा! वह जब एक-एक प्रजा में ब्रह्म का दर्शन करता है तो मानो देखो जनता में जर्नादन को, जनता में ब्रह्म को दृष्टिपात करके बेटा! वो मौन हो जाता है।

ब्रह्म सूक्तों में ब्रह्म का वर्णन

मेरे पुत्रो! देखो जब आदि ब्रह्मा ने महात्मा भृगु को ये चर्चा कराई तो उन्होंने पुनः कहा प्रभु! मैं ये नहीं जान पाया हूँ क्या मेरा वो ही प्रसङ्ग रह गया है क्या ब्रह्म सूक्तों में ब्रह्म का वर्णन किस प्रकार का आता है? मेरे प्यारे! देखो! ब्रह्मा जी ने कहा क्या मेरे विचार में तो ये आता है महर्षिवर! क्या सम्भवम् ब्रह्मेः प्रत्येक इन्द्रियों के विषयों

को एकत्रित करके और मानो देखो! जैसे हमारे यहाँ देखो वाणी से रस को ले लिया जाता है, और घ्राण से मानो देखो वह घ्राण से मन्द सुगन्ध को ले लिया जाता है और श्रोत्रों से दिशाओं को, श्रोत्रों से शब्दों को ले लिया जाता है, और नेत्रों से रूप को ले लिया जाता है और प्रेम से देखो सर्वत्र स्वादन अकृतियों को मानो देखो प्रेम से ले लिया जाता है वे सर्वत्र मानो देखो इसका सूक्ष्म रूप बना करके एकोकीकरण करते हुए एक ही सूत्र में सूत्रित करते हुए साकल्य बना करके मानो देखो वह ब्राह्मण वह ब्रह्मवेत्ता ही मेरे प्यारे! देखो ब्रह्माग्नि में वह जो अग्नि प्रदीप्त हो रही है हृदय स्थली में उसमें जो साकल्य बना करके आहुति देता है और वह मानो देखो उसे अपने में धारण कर लेता है **रूप, रस, गन्ध, प्रकृति के सर्वत्र रूप को अपने में धारण करके एक चेतना में प्रकाश रह जाता है और वह प्रकाश ही मानो देखो ब्रह्म के रूप में दृष्टिपात आता है।** मेरे प्यारे! देखो जब महात्मा भृगु जी ने ये वाक्य स्वीकार कर लिया और महात्मा भृगु ने कहा प्रभु! आपका तो ज्ञान बड़ा अद्वितीय कहा जाता है।

महात्मा भृगु जी द्वारा ब्रह्म याग का वर्णन

परन्तु देखो ब्रह्मणम् ब्रहे देखो ब्रह्म याग को कहते हैं। याग का नाम भी ब्रह्म है। मेरे पुत्रो! देखो, इसकी सर्वांग पूजा का नाम ये ब्रह्म पूजा कही जाती है। मेरे पुत्रो! देखो ये महात्मा भृगु ने अपने वाक्यों से वर्णन किया कि ब्रह्म याग किसे कहते हैं? ब्रह्म याग कहते हैं जो ब्रह्म का चिन्तन करता है, मनन करता है और मनन करके मानो देखो! उसको क्रियात्मक बना करके और वह उसी में रत्त हो जाता है बेटा! वो ब्रह्म याग कहलाया जाता है। यह ब्रह्म याग हो रहा है। ब्रह्म याग में हम परणित हो रहे हैं। मेरे पुत्रो! देखो ब्रह्म यागाम् ब्रह्म लोकाम् वाचप्रवाहाः यह ब्रह्म याग कहलाता है। मेरे पुत्रो! देखो ब्रह्म याग में क्या है क्या मुनिवरो! देखो ब्रह्म में अपने को अपने को ब्रह्म में जो

स्वीकार करता है वह ब्रह्म याग में परणित हो गया है। मेरे पुत्रो! देखो वही तो ब्रह्मवत्त कहलाया गया है। मेरे प्यारे! देखो ब्रह्म नाम परमात्मा का है जो सर्वत्र मानो व्याप्त रहता है, व्यापक रहता है और व्यापक रहने से मेरे पुत्रो! देखो वह ब्रह्म है। वह आनन्दमयी है, आत्मा का स्त्रोत है। आत्मा तत्व बेटा! उसी से बनते हैं। तो विचार-विनिमय क्या मेरे पुत्रो! देखो ब्रह्म किसे कहते हैं। हमारे यहाँ महात्मा भृगु ने इस वाक् को बेटा! स्वीकार कर लिया और महर्षि भृगु ने वहाँ से ऋषि देखो! वह ब्रह्मा जी से आज्ञा पा करके उन्होंने वहाँ से गमन किया।

बेटा! देखो ब्रह्मा कौन है? ब्रह्मा उसे कहते हैं जो वेद के मर्म को जानता है। वेदज्ञ ज्ञान को अपने में धारण करता है और मुनिवरो! देखो वह उपाधि में ब्रह्मा कहलाता है। ब्रह्मा वरणं ब्रह्मे। मेरे प्यारे! देखो वह ब्रह्मा यह सब उपाधियाँ कही गयी हैं।

वशिष्ठ और अरुन्धति

हमारे यहाँ वशिष्ठ मुनि की एक उपाधि है। वशिष्ठ उसे कहते हैं जो ब्रह्मवेत्ता कहलाता है और ब्रह्मनिष्ठ हो करके मेरे पुत्रो! ब्रह्म की चर्चा करता है वह ब्रह्मवेत्ता कहलाता है। मेरे पुत्रो! देखो महर्षि वशिष्ठ को ब्रह्मवेत्ता कहा जाता था और महर्षि विश्वामित्र भी ब्रह्मवेत्ता बने, परन्तु देखो। वह धनुर्याग करने से बेटा! देखो वह धनुर्यागी बन गए। मेरे प्यारे! देखो ये उपाधियाँ मानी जाती हैं। हमारे यहाँ पुत्रेष्टि, वृष्टि और मुनिवरो! देखो वाजपेयी याग, अग्निष्टोम याग जो कर लेते हैं उसको **शृङ्गी** की उपाधि प्राप्त की जाती है। मेरे प्यारे! देखो जो हमारे यहाँ अश्वमेध याग और रोहणीक्रेत, में केतु याग, कन्या याग मुनिवरो! देखो जब ये भिन्न-भिन्न प्रकार के यागों में परणित है उसका नाम **वैशम्पायन** कहा जाता है। वह वैशम्पायन ही माना जाता है। मेरे पुत्रो! देखो इसी प्रकार जो विष्णु याग, रुद्र याग, और देखो और जो शिव याग और ब्रह्म याग में परणित रहते हैं मेरे पुत्रो! देखो वह

ब्रह्मयागी बन करके मुनिवरो! देखो वही हमारे यहाँ **भृगु** के नाम से वर्णित किए गए हैं। ये महात्मा भृगु उपाधि परम्परागतों से चली आ रही है। जो पुरोहित भी रहते हों और ब्रह्मवेत्ता भी रहते हों मेरे प्यारे! देखो वह वशिष्ठ उपाधि है और अरुन्धति उसे कहते हैं जो विज्ञान में पारायण हो और विज्ञानवेत्ता हो अरुन्धति मण्डल में भ्रमण करने वाला हो उसको अरुन्धति कहा जाता है। वह वशिष्ठ की पत्नी कही गई है। मेरे प्यारे! देखो महर्षि वशिष्ठ मुनि महाराज की पत्नी का नाम अरुन्धति माना गया है। अरुन्धति और वशिष्ठ दोनों का मुझे विचार आता रहता है।

मुझे स्मरण आता रहता है बेटा! अरुन्धति एक समय अपने पति से बोली क्या हे प्रभु! ये अन्तरिक्ष में मानो देखो एक अरुन्धति मण्डल है, एक वशिष्ठ मण्डल है ये मानो दोनों का परस्पर क्या समन्वय रहता है? मेरे प्यारे! देखो महर्षि वशिष्ठ मुनि बोले हे देवी! हे अरुन्धति! तुम ये प्रश्न कर रही हो? उन्होंने कहा देवम् ब्रह्मे। उन्होंने कहा मेरा विचार तो ये कहता है क्या वशिष्ठ ही उसे कहा जाता है जो ब्रह्मवेत्ता हो और वशिष्ठ मण्डल में भ्रमण करने वाला हो। विज्ञान के माध्यम से अरुन्धति उसे कहते हैं जो मानो देखो इस मण्डल में रमण करने वाला और वह अरुन्धति कही गई है। तो मुनिवरो! देखो वह अरुन्धति बोली कि प्रभु! क्या हमारा नामोकरण इसीलिए अरुन्धति कहा गया है हम जो वैज्ञानिक हैं? उन्होंने कहा हाँ दिव्या से। तो मेरे प्यारे! देखो जो ब्रह्मवेत्ता हो, लोकों में रमण करने वाला हो वशिष्ठ मण्डल में उसका नाम मुनिवरो! देखो वशिष्ठ और अरुन्धति कहा जाता है।

महर्षि वशिष्ठ का जन्म

हमारे यहाँ पति और पत्नियों का समन्वय परम्परागतों से बड़ा विचित्र माना गया है। मुझे आधुनिक काल का तो इतना प्रतीत नहीं

है परन्तु परम्परागतों के कालों का मुझे स्मरण है क्या एक समय देखो रोहित नाम के ऋषि थे। जो रोहित नाम के ऋषि मानो सतोयुग के काल में महाराजा प्रजापति के यहाँ मानो देखो उनके राष्ट्र में वो तपस्या करते थे। तपस्या करते-करते एक समय वे वेद के वाङ्मय में जब पहुँचे, वेद का जब अध्ययन करने लगे तो उसमें मुनिवरो! देखो उसमें पुत्र विद्या का वर्णन आया। मानो पुत्र का वर्णन आया। पुत्र याग का जब वर्णन आने लगा तो उन्होंने विचारा क्या मुझे पुत्र याग करना चाहिए। पुत्र मानो देखो याग के रहस्यों को वह इतना नहीं जानते थे केवल वेद में अध्ययन किया क्या पुत्र याग होना चाहिए। तो मानो देखो वह इस वाक् को ले करके वहाँ से प्रस्थान किया भयङ्कर वनों से और राजा प्रजापति के द्वार पर आए। राजा प्रजापति ने मानो इस तपस्वी को दृष्टिपात करके आश्चर्य चकित हो गए क्या आज ऋषि का आगमन क्यों हुआ है। ये तो बहुत समय हो गए, कई सौ वर्ष हो गए तपस्या करते हुए ये तो वायु का सेवन करते हैं और वेद का अध्ययन करते हैं, ज्ञान में सदैव रत्त रहते हैं। ये इनका आज कैसे आगमन हुआ। राजा ने चरणों की वन्दना की और राजा ने कहा कहो ऋषिवर किस प्रकार आगमन हुआ है आपका? उन्होंने कहा मुझे पुत्रेष्टि याग करना है। मेरे लिए गृह होना चाहिए, द्रव्य होना चाहिए। राजा प्रजापति ने पाँच गृह में मानो देखो पाँच नगर प्रदान किए और उनका एक तालाब मानो देखो एक जलाश्य के तट पर एक गृह का निर्माण किया। मेरे पुत्रो! देखो उन्होंने, दोनों ने एक सन्तान को जन्म दिया। एक पुत्र याग किया देखो एक पुत्र याग होते ही ऋषि ने कहा देवी! तपस्यम् ब्रह्मा वेद कहता है तपो ब्रह्मणम् ब्रहे व्रतम देवो ब्रह्मा तपो हिरण्यम् ब्रह्मे मनो वाचप्रवाहा लोकाम्। देखो ऋषि ने कहा देवी देखो एक पुत्र का जन्म हो गया है चलो अब तपस्या में परणित होंगे। मेरे प्यारे! वो गृह भी वो मानो नगरी भी सर्वत्र को त्याग करके पुनः बेटा! देखो भयङ्कर वन में, वे कजली वनों में तपस्या करने लगे और वे बाल्य

को शिक्षा देते रहे। मेरे पुत्रो! देखो वही बालक मुनिवरो! देखो महर्षि वशिष्ठ के रूप में परणित हुआ।

मेरे पुत्रो! देखो मुझे स्मरण आता रहता है। आज मैं साहित्य में जाना नहीं चाहता हूँ। मैं ऋषि-मुनियों के उस गम्भीर मुद्रा में मुद्रित होना नहीं चाहता हूँ। विचार क्या मुनिवरो! देखो हमारे यहाँ संसार एक ऐसा विचित्रत्व में जब वेद के वाङ्मय में हम प्रवेश करते हैं तो ब्रह्मचर आता है। वेद के वाक् में जब प्रवेश करते है तो मृत्यु को हरात्मक दृष्टिपात करता है। मेरे पुत्रो! देखो ऐसा मुझे स्मरण आता रहा है क्या मानो देखो प्रजापति बड़े प्रसन्न हुए और प्रजापति ने जब ये विचारा कि दोनों ऋषि और ऋषि पत्नी तपस्वी बन गए हैं और वह मानो देखो ब्रह्मचरणे ब्रह्मेः वे ब्रह्मवेत्ता बालक को जन्म दे करके ब्रह्म सूत्र में पिरो करके मानो देखो वह वशिष्ठ रूप में, वे वशिष्ठ ब्रह्मचारी बन गया है। तो मेरे पुत्रो! देखो राजा बड़े प्रसन्नचित हो करके अपने राष्ट्र और अपनी नगरी को धन्य-धन्य उच्चारण करके बेटा! बड़े प्रसन्न हुए।

विचार-विनिमय क्या मेरे पुत्रो! मैं बहुत दूरी चला गया हूँ विचार देता हुआ। बेटा! **ब्रह्मसूक्त क्या है?** जो बेटा! देखो ब्रह्म को एक-एक कण-कण में दृष्टिपात करने वाला अपने क्रियाकलापों में जो परणित रहता है वो मनन कहलाता है, वह विचित्र कहलाता है। तो आओ मेरे पुत्रो! आज मैं तुम्हें कहाँ ले गया हूँ। विचार ये चल रहा है कि हमारे यहाँ नाना प्रकार की उपाधियाँ मानी जाती हैं और वे उपाधियाँ मुनिवरो! देखो बड़ी विचित्र रही हैं और वे उपाधियाँ मुनिवरो! देखो ब्रह्मयागी देखो यहाँ भिन्न-भिन्न याग करने से उन्हें उपाधियाँ प्राप्त होती रही हैं। मेरे पुत्रो! देखो जो विज्ञान में पारायण रहे हैं वे वशिष्ठ कहलाते हैं। जो महान विज्ञान में सत विज्ञान में पारायण रहे हैं वो शिकामकेतु उद्दालक मुनि रहे हैं। मेरे पुत्रो! देखो भिन्न-भिन्न प्रकार की आज मैं उड़ान उड़ता हुआ मानो एक विचार दे रहा हूँ।

कल्याण का मार्ग

आज का विचार ये क्या कह रहा है कि हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए वेद मन्त्रों को चिन्तन में लाते हुए उसमें कितने प्रकार की विद्या हैं, कितने प्रकार के क्रियाकलाप हैं मानो देखो उनका अध्ययन करने से उनके ऊपर अपने जीवन को क्रियात्मक बनाने से हमारा कल्याण होता है। ये है बेटा! आज का वाक्। आज के वाक् उच्चारण करने का अभिप्रायः ये क्या ब्राह्मण, ब्रह्मवेत्ता कौन हैं, ब्रह्मसूत्र क्या हैं इसके ऊपर बेटा! हमने कुछ विचार दिए हैं। समय मिलेगा मैं बेटा! देखो शेष चर्चाएँ तुम्हें कल प्रगट करूँगा। आज के वाक् उच्चारण करने का अभिप्रायः ये कि हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए देव की महिमा का गुणगान गाते हुए इस संसार सागर से पार हो जाएँ।

ये है बेटा! आज का वाक्, मुझे स्मरण है क्या माता अरुन्धति और वशिष्ठ मानो देखो अरुन्धति मण्डल में प्रायः भ्रमण करते रहते थे विचारों से भी, सङ्कल्प से भी और मुनिवरो! देखो वे क्रियात्मक यन्त्रों के द्वारा। मुनिवरो! इसी प्रकार वशिष्ठ मुनि महाराज देखो मन, कर्म, वचन तीनों ब्रह्म विद्या में पारायण रहते और वशिष्ठ मुनि महाराज बेटा! देखो अपने यान में विद्यमान हो करके वे मानो देखो वशिष्ठ मण्डल में भ्रमण करते रहते थे। तो मेरे प्यारे! ये उपाधि हमारे यहाँ सतोयुग से ले करके ये राम और राम .....

शेष अनुपलब्ध!

दिनाँक : 12 दिसम्बर, 1987
समय : रात्रि 8 बजे
स्थान : श्री हरिकिशन बसी
25, लाजपत नगर (IV)
नई दिल्ली-110024

॥ ओ३म् ॥

ज्ञान-विज्ञान : गणेश लक्ष्मी पूजन

जीते रहो!

देखो मुनिवरो! आज हम तुम्हारे समक्ष पूर्व की भाँति कुछ मनोहर वेदमन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे। ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से जिन वेदमन्त्रों का पठन-पाठन किया। हमारे यहाँ प्रत्येक वेदमन्त्र के ऊपर जब विचार-विनिमय किया जाता है तो प्रायः ऐसा दृष्टिपात होने लगता है जैसे एक-एक वेदमन्त्र इस ब्रह्म की गाथा गा रहा है। प्रत्येक वेदमन्त्रों में उस ब्रह्म का ज्ञान और विज्ञान निहित रहता है। प्रत्येक वेदमन्त्र उसकी गाथा गाता ही रहता है। उसके गुणों का गुणवादन करता ही रहता है। जिस प्रकार माता का पुत्र माता का गुणवादन करता रहता है क्योंकि वह इसके गुणों की विवेचना प्रायः करता रहता है। इसी प्रकार आजका हमारा वेदमन्त्र हमें उस आभा की याचना कर रहा है। हमें उस मार्ग का प्रदर्शन करा रहा है जिस पथ पर चलने के पश्चात् मानव का जीवन अमृतमयी बन जाता है अथवा ज्ञान और विज्ञान की प्रतिभा में रमण करने लगता है। मुझे बेटा! बहुत पुरातन काल जब स्मरण आने लगता है तो ज्ञान और विज्ञान की वार्ताएँ स्मरण आने लगती हैं। क्योंकि ज्ञान मानव को महान् और पवित्र बनाता है। क्योंकि ज्ञान नहीं है तो अज्ञानता में रमण करने वाला प्राणी तो पशु के तुल्य कहलाता है। वह चरिवर्द्धन कहलाता है। परन्तु वेद का मन्त्र मानव को ज्ञान और विज्ञान में ले जाता है।

आध्यात्मिक विज्ञान

हमारे यहाँ परम्परागतों से ही दो प्रकार के ज्ञान और विज्ञान की प्रतिभा का वर्णन किया जाता है अथवा विज्ञान भी दो प्रकार का

कहलाता है। एक भौतिक विज्ञान और दूसरा आध्यात्मिक विज्ञान। आध्यात्मिक विज्ञानवेत्ता प्रभु से मिलन करता है। आध्यात्मिकवादी प्रभु की चेतना को जानता है। आध्यात्मिक विज्ञान जितना ही मानव के समीप होता है उतना ही मानव के जीवन में रात्रि नहीं होती। बेटा! ज्ञान में रात्रि होती ही नहीं। विज्ञान में प्रकाश होता है। मानव का जीवन अमृत बन जाता है।

महाराजा हनुमान का जीवन

मुझे महाराजा हनुमान की विवेचना स्मरण आने लगती है। उनका जीवन स्मरण आने लगता है। माता की लोरियों का पान कर रहा है। माता अपने प्यारे पुत्र को उपदेश दे रही है, लोरियाँ देती हुई हे बाल्य! तू महान् बन, हे बाल्य तू ज्ञानी और वैज्ञानिक बन''। मेरे प्यारे! मुझे स्मरण है महाराजा हनुमान का जीवन कितना ज्ञान और विज्ञान में रमण करने वाला था। सूर्य की जितनी विद्याएँ थीं वह सर्वत्र विद्याओं को निगलने वाला एकोकी हनुमान कहलाता था। मुझे स्मरण है एक समय महाराजा हनुमान और शिव पुत्र गणेश हिमालय कन्दराओं में एक स्थली पर विद्यमान थे। दोनों का विचार-विनिमय चल रहा था, कि महाराज यह सूर्य क्या है? यह प्रकाश देता ही रहता है। तो वह अनुसन्धान-शालाओं में विद्यमान हो करके यह विचारने लगे कि कितने लोकों को सूर्य प्रकाश देता है। विचार-विनिमय करने वाले हनुमान और गणेश दोनों ने विचारा। मनन और चिन्तन करने से उन्हें यह प्रतीत हुआ, वैज्ञानिक यन्त्रों से उन्हें यह प्रतीत हुआ कि मंगल और चन्द्रमा, बुद्ध और इससे सम्बन्धित जो लोक हैं उन सबको प्रकाश देने वाला सूर्य की कहलाता है। उन्हें ऐसा प्रतीत हुआ। उन्होंने सूर्य विद्या पर अनुसन्धान किया। सूर्य क्या-क्या करता है? इसी सूर्य विद्या को ले करके भगवान् राम महर्षि वशिष्ठ मुनि महाराज के चरणों में विद्यमान हो करके कलाओं के ऊपर विचार-विनिमय करने लगे।

प्रथम कला

मेरे प्यारे! हमारे यहाँ सबसे प्रथम जो कला है उसका नाम प्राचीदिग् कहलाता है क्योंकि प्रातःकाल सूर्य से प्रकाश आता है और उसी प्रकाश को ले करके मानव अपने कार्यों में रत्त होने लगता है। प्रातःकाल में इस शान से सूर्य उदय क्यों होता है? यह विचार किया गया तो प्रतीत हुआ कि जब सृष्टि का सृजन हुआ था तो प्रभु ने तप किया। **तीन प्रकार के तप कहलाते हैं।** उन तपों की ज्योति कहलाती है अथवा उस तप का परिणाम कहलाता है। सबसे प्रथम द्यौ है इस द्यौ से सहायता ले करके चन्द्रमा प्रकाश देता है। द्वितीय रूपों में हमारे यहाँ वायु मानी गयी है जो संसार को प्राण देता है। तृतीय यह अग्नि कहलाती है लौकिक जो मानव को जन-जीवन, समाज को प्रकाशमय अथवा ज्योति और तेजोमय बनाता है। तो मुनिवरो! यह प्रभु का जो तेज है यह सृष्टि के प्रारम्भ से उस प्यारे प्रभु का तेज हमें दृष्टिपात आता है। विचार विनिमय करने से प्रतीत होता है वह जो द्यौ-मण्डल है उसमें मानव के चित्रों का दिग्दर्शन होता हुआ चित्र शब्दों के साथ में रमण करता हुआ द्यौ-लोक में चला जाता है। जो महान् शब्द है, जो विचित्र शब्द है, जो दर्शनों से गुथा हुआ सत्यता से गुथा हुआ शब्द है वह गति करता हुआ द्यौ-लोक को प्राप्त हो जाता है। उसका चित्रण नहीं हो सकता। बेटा! कोई यन्त्र का निर्माण नहीं किया गया जो उसको चित्रित करने वाला हो। इसी प्रकार मुनिवरो! वह द्यौ-लोक में रमण करता है।

मुझे स्मरण है, वेद के ऋषियों ने ऐसा कहा है कि **यजमान जब यज्ञ करता है, अपनी पत्नि से कहता है,** हे देवी! मैं याग कर रहा हूँ। तुम जैसे पृथ्वी बन करके नाना प्रकार की वनस्पतियों को उत्पन्न करती है इसी प्रकार यज्ञशाला में विद्यमान हो करके तुम वन्दनामयी कहलाती हो। देखो याग दोनों प्रारम्भ कर देते हैं। मेरे पुत्रो! यजमान

कहता है कि मैं स्वाहा कर रहा हूँ। हमारा रथ बनता है और रथ बन करके द्यौ-लोक में रमण करता है क्योंकि शब्दों के साथ में जो शुद्ध, पवित्र शब्द है जिसे हम स्वाहा कहते हैं वह **स्वाहा कहते ही चित्र बन करके द्यौ-लोक को प्राप्त हो जाता है।**

आज मैं तुम्हें विशेष विज्ञान की चर्चाओं में नहीं ले जा रहा हूँ। विचार-विनिमय क्या? हम यह उच्चारण कर रहे थे कि प्रभु ने तप में ही तीन प्रकार के तेजोमयी इस संसार को रचा है, तो छै कलाओं को ले करके भगवान् राम अपनी विज्ञानशाला में, अपनी यज्ञशाला में विद्यमान हो करके अनुसन्धान करते रहे हैं।

छः कलाएँ

मुझे स्मरण आता रहता है प्राचीदिग् और दक्षिणदिग् कहलाती है वही प्रतीची है और वही उदीची कहलाती है। यह चार कलाएँ मानव के समीप रहती है। इन कलाओं के ऊपर अनुसन्धान प्राचीदिग् सूर्य उदय होता है, दक्षिणीदिग् विद्युत की तरंगें चलती हैं और मुनिवरो! प्रतीचीदिग् अन्न का भण्डार रहता है और उदीचीदिग् जहाँ ज्ञान की ज्योति जागृत रहती है। ध्रुवा में मेरे पुत्रो! ध्रुवा गति और ऊर्ध्वा गति दो प्रकार की आभा कहलाती है और ये छै कलाएँ कहलायी गयी हैं। इनके ऊपर ऋषियों ने बहुत अनुसन्धान किया अथवा विचार-विनिमय किया।

द्यौ

मेरे प्यारे! भगवान गणेश जी अपने आँगन में विद्यमान हो करके, हनुमान के समीप विद्यमान हो करके अनुसन्धान करते रहे। वह सूर्य विद्या पर अपना निरीक्षण करते रहे। मुझे स्मरण आता रहता है **महाराज हनुमान ने दो हजार पृष्ठों की एक पोथी का निर्माण किया था जो सूर्य विद्या पर उन्होंने लेखनियाँ बद्ध कीं।** उन लेखनियों में क्या था?

कि सूर्य कितना विज्ञानमयी कहलाता है? उन्होंने बेटा! यन्त्रों का निर्माण भी किया और वह यन्त्र कैसे? जो सूर्य की ज्योति को ले करके रात्रि काल में उनको जानना और उन्हीं में रत्त रहना। यह जो पृथ्वी है, इस पृथ्वी के गर्भ में नाना प्रकार का खनिज और खाद्य विद्यमान है, वह सूर्योमयी कहलाया गया है। तो विचार करने से प्रतीत हुआ कि यह सूर्य ऐसा अनुपम देव है जो प्रातःकाल से सायँकाल तक प्रकाश देता रहता है, उसी प्रकाश से प्रत्येक मानव प्रकाशित रहता है। वही प्रकाश तेजोमयी द्यौ कहलाता है।

आत्मा का प्रकाश

आओ बेटा! मैं विशेष चर्चा तुम्हें प्रकट करने नहीं आया हूँ। आज मैं तुम्हें यह विचार देने के लिए आया हूँ कि आज हम अपने जीवन को प्रकाशित करने वाले बनें। हमारा जीवन प्रकाशमय हो क्योंकि आत्मा का जो प्रकाश है वह मानव के समीप रहता है। एक समय बेटा! गार्ग्यपत्य ने ब्रह्मचारी कवन्धि से यह कहा था कि हमारा जो अन्तरात्मा है, अनुपम ज्योति है, सूर्य का जो प्रकाश है वह कोई प्रकाश नहीं है जो आत्मा का प्रकाश सदैव अपने में अनुभव करता रहता है। अन्धकार छाया हुआ है, कोई प्रकाश नहीं है परन्तु आत्मा के प्रकाश से मानव प्रकाशित होता रहता है। इसी प्रकार सूर्य की यह जो कलाएँ हैं इन कलाओं के ऊपर जो भौतिकवाद विज्ञान की तरंगें उत्पन्न होती हैं उन्हीं को सदैव मानव जानता रहता है।

मेरे प्यारे! आज मैं तुम्हें एक ऋषि के आसन पर ले जाना चाहता हूँ जहाँ ऋषियों का विचार-विनिमय होता रहा है। एक समय महाराजा हनुमान और गणेश जी भ्रमण करते हुए स्वेनात ऋषि के द्वार पर पहुँचे। महाराजा स्वेनात ऋषि अपनी स्थली पर विद्यमान थे। विद्यमान होने के पश्चात् वह 'अप्रातम् ब्रह्मणः लोकः' वह सूर्य के ऊपर अनुसन्धान कर रहे थे। वह सूर्य का प्रकाश आत्मा के प्रकाश से समन्वय कर रहे थे।

यह निर्णित किया ऋषि ने कि सूर्य का प्रकाश उस द्यौ के प्रकाश से भी ऊर्ध्वागति वाला प्रकाश है इसको जान करके मानव अनुपमता को प्राप्त हो जाता है। जब मानव अपने प्रकाश में, इस आत्मा के प्रकाश में, भौतिक प्रकाश को अपने में समन्वय करता है तो मानव जीवन में एक अनुपम प्रकाश आ जाता है। वही प्रकाश माता बाल्यकाल में अपने पुत्र को परणित कर देती है।

माता का प्रिय याग

मुझे स्मरण है मैंने तुम्हें कई काल में वर्णन कराया। एक समय माता कौशल्या व भगवान् राम ने वशिष्ठ मुनि महाराज के आश्रम में स्वेत केतु महाराज के दर्शन किए। उन्होंने राम को पाते ही कहा महाराज! राम की बुद्धि इतनी तीव्र क्यों है? इसका मूल कारण क्या हे? क्योंकि राष्ट्रीयता में इतनी तीव्रता प्राप्त नहीं होती। **मेरे प्यारे! राम बोले कि यह मेरी माता की देन है।** मेरी माता ने प्रकाश दिया है। माता क्या प्रकाश देती थी? विचारने से भगवान् राम ने यह निर्णित किया कि यह प्रकाश क्या है? माता का दिया हुआ है। माता के गर्भ में जब राम विद्यमान थे तो माता एक महान प्रकाश देती थी और वह प्रकाश क्या था? स्वयँ परिश्रम करके अन्न को प्राप्त करती रही और उस अन्न को प्राप्त करके वह उस अन्न को पान करती थी जिससे माता के गर्भस्थल में जो बालक था उसका निर्माण हो रहा था। क्योंकि **मन की जो उत्पत्ति है, मन का जो निर्माण होता है अन्न से ही होता है।** ''अन्नादम् भूतम् ब्रह्मणे लोकः'' क्योंकि प्रभु ने सृष्टि के प्रारम्भ में देव ने सात प्रकार के अन्नों को उत्पन्न किया उनका परिणाम यह हुआ कि सात प्रकार के अन्नों से ही यह सर्व संसार के प्राणी आच्छादित रहते हैं। मुनिवरो! अन्नाद से ही प्रत्येक प्राणी के मन की आभा जन्म लेती रहती है इसी प्रकार जो मन की उत्पत्ति मानी गई है, वह अन्न से मानी गई है। इसलिए हमारे यहाँ अन्न को विशेष

पवित्र माना गया है। माता कौशल्या अपने बालक के मन का निर्माण कर रही है और कैसे कर रही है? कला-कौशल कर रही है। उसके बदले जो अन्न आ रहा है उसे पान कर रही है। बालक का निर्माण हो रहा है, बालक पनप रहा है। मेरे प्यारे! देखो, माता के गर्भस्थल में बालक का निर्माण हो जाता है। वह माता का गर्भाशय विश्वविद्यालय कहलाता है। विश्वविद्यालय में ब्रह्मचारी जो अध्ययन कर लेता है वह अध्ययन की शैली संसार के प्राणियों से प्राप्त नहीं होती। हे माँ, तू कैसी पवित्र है? तू विश्वविद्यालय बन करके मानव को ऊर्ध्वागति दे देती है और तपोमय बनाती रहती है। मेरे प्यारे! भगवान् राम ने यह कहा कि यह मेरी माता की देन है। जब संसार में माता के गर्भ से पृथक् हुए तो माता लोरियों का पान करा रही है। त्याग और तपस्या का उपदेश दे रही है, हे बालक! तुझे महान् बनना है, हे बालक तुझे राष्ट्र का नायक बनना है और उसमें भी तुझे ब्रह्मवेत्ता बनना है। ब्रह्मवेत्ता बन करके यहाँ ऋषि-मुनि तेरे से शिक्षा लेने वाले बनें। माता की उपदेश मञ्जरी चल रही है। इसी उपदेश के द्वारा ब्रह्मचारी माता की लोरियों में पनप रहा है। अपने जीवन को प्राप्त कर रहा है। माता कौशल्या यही चाहती है कि मैं स्वयँ परिश्रम करती हुई श्रम के उस बालक को अन्नाद प्राप्त करूँ जिसमें मेरा गर्भाशय पवित्र हो जाए। मेरे प्यारे! माता कितना प्रिय याग कर रही है? हे माता! तेरा यह याग सफल उस काल में हो जाता है जब बाल्य ब्रह्म का उपदेश देता है। ब्रह्म की आभा में रमण करता है। रमण करता हुआ अपने जीवन को महान् बनाना रहता है।

मेरे प्यारे! भगवान् राम ने ऋषि से यह कहा कि यह माता की देन है। आज वह माता जो ब्रह्म को जानने वाली ब्रह्मनिष्ठ कहलाने वाली, जो षोडश कलाओं का ज्ञान मुझे माता ने गर्भाशय में परणित कर दिया था। वह षोडश कलाएँ, सबसे प्रथम यह छः कलाएँ हैं, इसके

पश्चात् चार कलाएँ एक मन कला, चक्षु कला, श्रोत्र कला, घ्राण कला और वाणी अत्रियं स्तन कला यह भी कला कहलाती हैं। इसके पश्चात् हमारे यहाँ एक अग्नि कला कहलाती है। एक ऊर्ध्वा में द्यौ-कला कहलाती है। अन्तरिक्ष कला है और समुद्र कला यह बारह कलाएँ हमारे यहाँ विशेष कला कहलाती हैं। इनका माता ने अपने बालक को ऊर्ध्वा में पहुँचाने के लिए वर्णन किया। विचार-विनिमय क्या? मेरे प्यारे! यह कलाएँ हैं जिनमें जाने के पश्चात् मानव प्रभु से मिलान करता है। प्रभु से उसका मिलन होता है। आत्मा उसका महान् बन जाता है।

महाराजा हनुमान और गणेश जी का अनुसन्धान

मेरे पुत्रो! आजका वाक्य क्या कह रहा है? मैं आज तुम्हें महाराजा हनुमान और गणेश जी की चर्चाएँ प्रकट कर रहा था। महाराजा हनुमान और गणेश जी दोनों जब ऋषि के द्वार पर पहुँचे तो ऋषि से उन्होंने यही कहा कि महाराज! हम वैज्ञानिक बनना चाहते हैं, हम सूर्य विद्या के ऊपर अपना अनुसन्धान करना चाहते हैं। तो महाराजा गणेश जी ने हनुमान जी ने पादुका नामक एक यन्त्र का निर्माण किया था। उस **पादुका** यन्त्र में यह विशेषता थी कि प्राण शक्ति का उनमें उन्होंने सृजन किया। जिस पादुका पर विद्यमान हो करके इस पृथ्वी से उड़ान उड़ने लगे और पृथ्वी से उड़ान उड़ते हुए वह मँगल में पहुँच गए। मंगल से उड़ान उड़ी तो बृहस्पति में पहुँच गए और जब पुनः मँगल में आए तो मँगल के वैज्ञानिकों ने उनके यन्त्र को कटिबद्ध करना चाहा। उस समय **स्वेताम् वृहीणिक** नाम के मँगल मण्डल में एक वैज्ञानिक रहते थे। जब उन्होंने उस यन्त्र को अपने राष्ट्र में, मँगल में रहने के लिए प्रतीति की और अपने यन्त्रों का एक रूपान्तर उसके ऊपर आक्रमण किया तो मुनिवरो! हनुमान और गणेश जी दोनों उस यन्त्र को ले करके अर्न्तध्यान हो गए और यन्त्र को ले करके वह पृथ्वी मण्डल पर आ गए।

परिणाम क्या मुनिवरो! मुझे एक समय मेरे पुत्र महानन्द जी ने स्मरण कराया है कि आधुनिक काल में भी ऐसे वैज्ञानिक यन्त्रों का निर्माण हो गया है जो यन्त्र इस पृथ्वी मण्डल पर आते हैं, समुद्र के तटों पर यह यन्त्र प्राप्त होते रहते हैं। परन्तु मैं आज आधुनिक काल के विज्ञान को तो इतना परिश्रमी नहीं जान पाता परन्तु वह यन्त्र जब पृथ्वी पर आ गया। एक समय बेटा! दोनों वैज्ञानिक अपनी आभा में रमण कर रहे थे उस समय माता पार्वती और शिव दोनों कहीं से भ्रमण करते हुए उनके द्वार आ गए, उनकी विज्ञानशाला में आ गए। उन्होंने कहा हे बाल्य! तुम क्या कर रहे हो? उन्होंने कहा, हे मातेश्वरी, हे पितृजन! हम यन्त्रों का निर्माण कर रहे हैं। **आज हमने एक ऐसा यन्त्र निर्माणित करना है जिन यन्त्रों में मानव के जीवन को वायुमण्डल से सहायता प्राप्त होती रहे और उस मानव को शत्रु विजय न कर सके।** मेरे प्यारे! उन्होंने ऐसे यन्त्र का भी निर्माण किया जिस यन्त्र में मानव को सहायता प्राप्त होती थी। संग्राम कर रहा है परन्तु यन्त्र सहायता दे रहा है दूसरा मानव शत्रु से विजय नहीं हो रहा है तो इस प्रकार के यन्त्रों का भी उन्होंने प्रायः निर्माण किया। परन्तु एक यन्त्र ऐसा निर्माण किया उन्होंने, जिस यन्त्र में विद्यमान हो करके समुद्र के निचले स्थल को माप करके वह तट पर आ जाते थे।

मैं इस विज्ञान में जाना नहीं चाहता हूँ। विचार-विनिमय क्या? उन्होंने एक ऐसे यन्त्र का निर्माण किया, पार्वती और शिव की सहायता से कि यन्त्र को धीमे-धीमे अन्तरिक्ष में ले गए और जहाँ इस पृथ्वी की आकर्षण शक्ति समाप्त होती है और चन्द्रमा की आकर्षण शक्ति का मिलान होता हैं, उस यन्त्र को वहाँ स्थिर कर दिया और उस यन्त्र में विद्यमान हो करके **बहत्तर मण्डलों का भ्रमण** किया करते थे। आज मैं क्या वर्णन कर सकता हूँ उन महापुरुषों का जिन्होने अपने जीवन के ऊपर बहुत अनुसन्धान किया और वैज्ञानिक तथ्यों के जानने का

उन्होंने प्रयास किया। मेरे प्यारे! मैंने कई काल में वर्णन करते हुए कहा है क्योंकि हनुमान जी की मृत्यु नहीं होती थी। हनुमान जी के शरीर की आभा इतनी विचित्र बन रहती थी और महाराजा गणेश जी मैंने बहुत पुरातन काल में यह वर्णन किया कि महाराजा गणेश जी ने एक **चुंगेत** नाम के यन्त्र का निर्माण किया था और चुंगेत नाम का जो यन्त्र था उसमें वह विद्यमान हो करके इस पृथ्वी की परिक्रमा करता हुआ, मंगल की परिक्रमा करता हुआ सूर्य की किरणों के साथ सूर्य में प्रवेश कर जाता था।

मानव की सम्पदा

बेटा! तो विचार करने से यह प्रतीत होता है हमारे यहाँ हमारी वैदिक सम्पदा में वैदिक विज्ञानशाला में नाना प्रकार के यन्त्रों का निर्माण होता रहा है और मुनिवरो! उसमें ज्ञान और विज्ञान प्रायः ओत-प्रोत रहता है। एक समय दोनों वैज्ञानिक सम्भानु ऋषि महाराज के द्वार पर पहुँचे। सम्भानु ऋषि महाराज ने कहा, आओ महावृत्तिः। दोनों आश्रम में विद्यमान हो गए। ऋषि ने कहा, मैंने श्रवण किया है कि तुमने यन्त्रों का निर्माण किया है। तुम यह क्या कर रहे हो? इससे संसार का विनाश होता है। उन्होंने कहा, विज्ञान से विनाश नहीं होता। विज्ञान तो मानव की सम्पदा है। ऋषि ने कहा, अस्त्रो-शस्त्रो से तुम विनाश को प्राप्त हो जाओगे। उन्होंने कहा हम विज्ञान को नष्ट नहीं होने देगे, न इससे हमारा विनाश होगा। हम प्रातःकाल याग करते हैं और याग के द्वारा, गो-घृत के द्वारा हम **गो-वर्धन याग** करते हैं, उससे वायुमण्डल पवित्र बनता है।

याग की प्रतिभा

मेरे प्यारे! विचार-विनिमय क्या? हमारे ऋषि-मुनियों के मस्तिष्कों में यागों का चलन परम्परागतों से रहा है। वैदिक साहित्य में हमारे यहाँ

यज्ञ की प्रतिभा का वर्णन आता है। क्योंकि हमारे यहाँ ऋषिजन योग-साधना के लिए यौगिकता को पवित्र बना देते हैं वह याग कहलाता है। माता अपने पुत्र को जन्म दे रही है, वह याग कर रही है। राजा राष्ट्र का निर्माण कर रहा है तो याग कर रहा है। वैज्ञानिक जब विज्ञानशाला में विद्यमान होते हैं तो सबसे प्रथम वह यज्ञशाला का निर्माण करते हैं। **महर्षि भारद्वाज के यहाँ बेटा! चौबीस प्रकार की यज्ञशाला थीं,** महाराजा गणेश जी के यहाँ चौबीस प्रकार की यज्ञशाला थीं। महाराजा शिव के यहाँ जिन्होने **रूद्रेष्टि याग** का निर्माण किया। रूद्र क्या है? रूद्र हमारे यहाँ उसे कहते हैं जो रूला न सके। मेरे प्यारे! शिव को रूद्र रूपों में परणित किया है। वह रूद्रेष्टि याग करते थे। **एक सौ ग्यारह यज्ञशालाओं का निर्माण महाराजा शिव के यहाँ होता रहा है।** यहाँ संसार को दृष्टिपात करने के पश्चात् ऐसा प्रतीत होता है कि प्रत्येक मानव इस संसार में याज्ञिक बना हुआ है। माता के द्वार पर जाता हूँ तो माता याग कर रही है। राजा के द्वार पर जाता हूँ तो राजा याग कर रहा है। जो राजा याग नहीं करता है उस राजा के राष्ट्र की सम्पदा समाप्त हो जाती है। जिस राजा के यहाँ ब्रह्मवेत्ता पुरुष नहीं होते, राजा के राष्ट्र में याज्ञिक पुरुष नहीं होते, अग्निष्टोम् याग के वेत्ता नहीं होते उस राजा का राष्ट्र अन्धकार में चला जाता है।

मेरे प्यारे! विचारने से प्रतीत यही होता है, भगवान् राम अपने यहाँ उपदेश यही देते थे तुम्हारे यहाँ याग होना चाहिए। याग की प्रतिभा मानव के मस्तिष्कों में होनी चाहिए। यह क्रिया **देवपूजा** कहलाती है और इसी देवपूजा से ही याज्ञिक यज्ञमयी बनता है, वैज्ञानिक विज्ञानवेत्ता बनता है। मुनिवरो! मेरी प्यारी माता विदुषी बन जाती है। ब्रह्मचारी विद्यालय में ब्रह्मचारी बन रहा है, उसका निर्माण हो रहा है याग के द्वारा। मुनिवरो! यह संसार एक याज्ञमयी माना गया है। आज मैं विशेष चर्चा तुम्हें प्रकट नहीं करूँगा। **आज मैं विचार**

यह देने के लिए आया हूँ, यहाँ प्रत्येक मानव, प्रत्येक श्वास के द्वारा याग करता है। मानव की शरीर रूपी जो यज्ञशाला है ऋषियों ने इसकी बहुत ऊँची कल्पना की है। इसके ऊपर बहुत ऊर्ध्वा से विचारा है।

गणपति और सरस्वती

मुनिवरो! मैं महाराजा हनुमान और गणेश की चर्चा कर रहा था। गणेश का, लक्ष्मी का, दोनों का समन्वय रहता है। जहाँ गणेश रहते हैं वहाँ लक्ष्मी रहती है। गणेश जी का अभिप्राय जहाँ महाराजा शिव के पुत्र का नाम गणेश था, वहाँ गणपति मेरे प्यारे! जो गुणों का स्वामी है, गुणों का स्वामी कौन है? **हमारे यहाँ गण नाम प्राण को कहा गया है** और जो प्राणो का स्वामी है मानो प्राणेश्वर है, वह गणपति कहलाता है और जहाँ गणपति रहता है मानव के शरीरों में वहाँ लक्ष्मी श्री वास करती है। श्री हमारे यहाँ सरस्वती को कहते हैं, ज्ञान को कहते हैं, विज्ञान को कहते हैं। मेरे प्यारे! भिन्न-भिन्न प्रकार के इसके स्वरूप माने गए हैं और जिन गृहों में लक्ष्मी का पूजन होता है वह गृह पवित्र बनते हैं। यह चर्चाएँ तो बेटा! हम पुनः प्रकट करेंगे।

आजका वाक्य हमारा क्या कह रहा है? कि हम इस संसार में महान् बनने के लिए, ऊर्ध्वागति बनने के लिए हमें बेटा! अपने जीवन को महान् बनाना है। **विज्ञान में रमण करना है और आध्यात्मिक विज्ञान में प्रवेश करना है** जिससे हम प्रभु के राष्ट्र में जा करके प्रकाश को प्राप्त करते रहें और प्रभु के द्वार पर जाने से बेटा! रात्रि और अन्धकार नहीं रहता। जैसे माता का पुत्र है, माता की लोरियों का जब पान करता है तो संसार के पदार्थ उसके लिए तुच्छ बन जाते हैं इसी प्रकार जो प्रभु के राष्ट्र में चला जाता है उसे इस संसार का वैभव अमान्य हो जाता है। यह है बेटा! आजका वाक्य। मुझे समय मिलेगा मैं शेष चर्चाएँ तो कल प्रकट करूँगा।

आज का विचार क्या? आज मैं बेटा! तुम्हें यह प्रकट करा रहा था कि विज्ञान कितना ऊर्ध्वागति में मानव के मस्तिष्कों में रमण करता रहा है, विज्ञान और ज्ञान मेरे पुत्रो! मानव की एक विशेष सम्पदा बन करके रहती है और वही सम्पदा इस संसार को ऊर्ध्वा में ले जाती है। राष्ट्र और समाज इसी से निर्माणित होते हैं, गृह इन्ही से पवित्र बनते हैं। यह है बेटा! आजका वाक्य। मुझे समय मिलेगा, मैं शेष चर्चाएँ तुम्हें कल प्रकट करूँगा। आजका वाक्य समाप्त, अब वेदों का पठन-पाठन होगा।

वेदपाठ. . . . . .

अच्छा भगवन्! आज्ञा

ओ३म् शान्तिः शान्तिः शान्तिः

दिनाँक : 29 सितम्बर, 1981
स्थान : ग्राम धनौरा, मेरठ

॥ ओ३म् ॥

ऋषियों के उद्‌गार

1. परमात्मा को जाने बिना, उसको कण-कण में दृष्टिपात किए बिना हम अपनी अन्तरात्मा को चेतनवत् नहीं कर सकते।
2. बिना परमात्मा के विश्वास के, विवेक के मानव दूसरों में त्रुटियों को दृष्टिपात करता रहता है यदि वह अपने जीवन की त्रुटियों पर दृष्टिपात कर ले तो वह महापुरुष बन जाए।
3. यदि मान अपमान को मानव ने त्याग दिया तो वह परम मार्ग का पथिक बन गया है।
4. मान अपमान की जो प्रतिभा है यह मानव के जन्म-जन्मान्तरों का कारण बनती है।
5. हम आत्मवत्त बनते हुए मान और अपमान को त्यागते हुए इस संसार से चले जाएँ।
6. समाज में प्रभु को समर्पित करने की क्षमता होनी चाहिए। उस काल में यह राष्ट्र और समाज ऊँचा बनेगा।
7. यदि योगी बनना चाहते हो तो अपने को प्रभु को समर्पित करने की शक्ति होनी चाहिए।
8. प्रभु को समर्पण करने से, जीवन को यज्ञमय बनाने से समाज और राष्ट्र ऊँचा बनता है।
9. वेद के वचनों के अनुसार तथा महापुरुषों के आदर्श के अनुसार राष्ट्र और समाज को ऊँचा बनाएँ।
10. परमात्मा के विश्वास वाले महात्मा मृत्यु से भयभीत नहीं होते।
11. प्रभु जब हम में है और हम प्रभु में हैं तो पवित्र वस्तु न कोई आती है न कोई जाती है।
12. यदि चित्त में कोई संस्कार नहीं होंगे तो संसार के आवागमन का कारण नहीं बनता।
13. जीवन योनि संस्कारों की देन है।

Creation, and the Institution of National Order

Ravana blesses Rama at the end of the yajna

Look Sages ! When Ravana uttered these words, people were dumb-founded (with appreciation). They expressed, "Oh! Ravana is certainly very wise." Thus the Yajna was over. Ravana, in his final blessings, had said, " Oh, Rama ! It looks ominous that your desires will be positively fulfilled". Then he spoke to Sita, "O, Sita ! If you like, you may stay in the service of your husband or else you may accompany me back to Lanka." Sita, thereupon, replied, "Sire ! From to-day onward you have become my Brahma (father). For me both the places are alike. But, Sire ! I shall accompany you."

Sages ! This is called Dharma. It was a matter of principle for Sita. She touched Rama's feet in reverence and got into Ravana's plane. At that instant, full of feelings and emotions, Ravana, quoting a verse from the Rigveda, had said, "O, Sita; I am foreseeing today that the time of my down-fall has come. My Lanka is about to be destroyed. He, who is my sworn enemy, has owned his advesary and has deprived him of his spiritual morale by extoling him as Brahma. O, Sita ! Why should not his desire be fulfilled ? Now I am realizing that I should not have solemnised this Yajna. With the successful completion of this Yajna, I can visualize that not a single body will survive in my Lanka." So lamenting, Ravana was submerged in grief.

Ravana's ambitions before his death

O, Sages ! Later Rama invaded Lanka and, after a bloody war, vanquished Ravana. When Ravana was about to die he had said, "Rama ! I am in my last breaths. I intended to do four things in my life time. Firstly, the smoke should cease to appear with fire. Secondly, I wanted to pave a permanent path to the Moon. Thirdly, I wanted to make it possible to control death. The fourth thing was that I wanted to know the creation known as "Atal & Vital'. But alas ! I have failed to accomplish these."

Rama diffused his culture in Lanka and crowned Vibhishna

O, Sages, After Ravana's death, Rama crowned Vibhishana as the sovereign head of Lanka, and diffused his culture there. Sita was reunited to Rama and they proceeded back to Ayodhya victoriously. O, Sages ! It was Tretayug when Rama reached Ayodhya. This was about 850670 years ago. Under Muni Vashistha's advice, Rama began to rule the country.

What is Ram Rajya ?

O Sages ! Once Rama bowing his head before Sage Vashistha enquired of him, "How can I establish Ram Rajya ?" The sage Vashistha then replied, "Before your kingdom changes into Ram Rajya, you must become Vishnu. So long as you are not Vishnu, your kingdom cannot be changed to Ram Rajya."

Vishnu-the King having four Arms.

Rama said, "Please explain how can I be Vishnu ?"

The Sage Vashistha said, "O Rama, first of all you must have a Padma in your hand."

What is Padma ?

Ram asked, "Sire, what is a Padma ?"

The sage in a joyful mood replied, "O Rama, listen. Padma is the name of character and etiquette. A nation possessing character and etiquette is a pious one, and a nation devoid of character-its individuals having no respect for one another must perish sooner or later. O Rama, if you want your nation to be a pious one then it is essential that you must have a Padma in one of your hands, your nation must be equipped with true knowledge and that knowledge must contain in it the waves of character and etiquette. Such knowledge is the best-such knowledge makes a nation successful. Rama, this Padma can elevate you higher and higher-you can rule over the whole world, and if there is no character and etiquette your kingdom can never be changed into Ram Rajya."

Pujyapad Gurudev

॥ ओ३म् ॥

चतुर्वेद ब्रह्म पारायण महायज्ञ

रविवार 6 नवम्बर, 2016 से 13 नवम्बर, 2016 तक

परमपिता परमात्मा की असीम अनुकम्पा से एवं पूज्यपाद गुरुदेव **ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी** महाराज की पावमानी प्रेरणा से आचार्य गुरुवचन शास्त्री जी के ब्रह्मतत्त्व में चतुर्वेद ब्रह्म पारायण महायज्ञ का आयोजन ग्राम सिसोली, गढ़ रोड मेरठ (उत्तर प्रदेश) में आयोजित किया जा रहा है। आप अपने परिवार व अपने इष्ट सम्बन्धी एवम् मित्रों सहित सादर आमंत्रित हैं। कृपया पधारकर यज्ञाहुति प्रदान कर एवं तन, मन, धन का सहयोग देकर, पुण्य के भागी बनें।

आयोजक एवम् निवेदक
समस्त क्षेत्रवासी ग्राम सिसोली, मेरठ

सूचना

सभी आजीवन/वार्षिक सदस्यों को 'यौगिक प्रवचन' पत्रिका प्रत्येक मास की 10/11 तारीख को प्रेषित की जाती है। किसी भी सदस्य को पत्रिका प्राप्त न होने की स्थिति में अपने पोस्ट मैन से एक सप्ताह के समय में जानकारी करें और फिर भी न मिलने की स्थिति में अपने सम्बन्धित पोस्ट ऑफिस में इस विषय में लिखित एक प्रार्थना-पत्र पोस्ट मास्टर साहब को दें जिससे कि पत्रिका न मिलने की खोज-बीन डाक विभाग द्वारा कराके आपकी पत्रिका आपको समय पर मिलनी प्रारम्भ हो जाए। कृपया प्रार्थना-पत्र की एक प्रति पर डाक विभाग द्वारा प्राप्ति के हस्ताक्षर व मोहर लगवाकर हमें भी भेज देवें जिससे कि इस विषय में यहाँ भी डाक विभाग को अवगत करा दिया जाए।

वैदिक अनुसन्धान समिति (पञ्जी.)

योगनिष्ठ पूज्यपाद ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज (शृङ्गी ऋषि जी) की अमृतवाणी संहिता के रूप में

*1.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 1)	80.00
*2.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 2)	80.00
3.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 3)	60.00
4.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 4)	60.00
5.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 5)	60.00
6.	Yogic Wisdom of Ancient Rishis	80.00
7.	वेद पारायण-यज्ञ का विधि विधान	25.00
8.	आत्म-लोक	35.00
9.	धर्म का मर्म	40.00
10.	शंका-निवारण	30.00
11.	यज्ञ-प्रसाद अर्थात् यज्ञ का महत्व	40.00
12.	आत्मा व योग-साधना	35.00
*13.	देवपूजा	50.00
14.	अतीत का दिग्दर्शन (भाग 1)	125.00
15.	अतीत का दिग्दर्शन (भाग 2)	125.00
16.	अतीत का दिग्दर्शन (भाग 3)	125.00
17.	रामायण के रहस्य	35.00
18.	यज्ञ एवं औषधि विज्ञान	40.00
19.	महाभारत के रहस्य	30.00
20.	अलङ्कार-व्याख्या	35.00
21.	रावण-इतिहास	50.00
22.	महाराजा-रघु का याग	30.00
23.	वनस्पति से दीर्घ-आयु	35.00
24.	मोक्ष प्राप्ति का मार्ग	35.00
25.	चित्त की वृत्तियों का निरोध	35.00
26.	आत्मा, प्राण और योग	35.00
27.	पञ्च-महायज्ञ	35.00
28.	अश्वमेघ-याग और चन्द्रसूक्त	40.00
29.	याग-मन्जूषा	40.00
30.	आत्म-दर्शन	30.00
31.	पुत्रेष्टि-याग और मातृ-दर्शन	30.00
32.	याग और तपस्या	60.00
33.	यागमयी-साधना	35.00
34.	यागमयी-सृष्टि	35.00
35.	याग-चयन	40.00
36.	दिव्य-रामकथा	120.00
37.	ज्ञान-कर्म-उपासना	35.00
38.	दिव्य-ज्ञान	40.00
*39.	महाभारत एक दिव्य दृष्टि	90.00
40.	महर्षि-विश्वामित्र का धनुर्याग	40.00
41.	आत्म-उत्थान	40.00
42.	तप का महत्व	40.00
43.	अध्यात्मवाद	40.00
44.	ब्रह्मविज्ञान	40.00
45.	वैदिक-प्रभा	35.00
46.	प्रकाश की ओर	35.00
47.	कर्तव्य में राष्ट्र	40.00
48.	वैदिक-विज्ञान	35.00
49.	धर्म से जीवन	35.00
50.	आत्मा का भोजन	40.00
51.	साधना	35.00
52.	त्रेताकालीन-विज्ञान	40.00
53.	यज्ञोमयी-विष्णु	40.00
54.	यौगिक प्रवचन माला भाग-6	80.00
55.	स्वर्ग का मार्ग	40.00
*56.	यौगिक प्रवचन माला भाग-7	80.00
57.	माता मदालसा	50.00
58.	यौगिक प्रवचन माला भाग-8	80.00
59.	यौगिक प्रवचन माला भाग-9	80.00
60.	यौगिक प्रवचन माला भाग-10	80.00
61.	याग एक सर्वाङ्ग पूजा	80.00
62.	यौगिक प्रवचन माला भाग-11	80.00
*63.	यौगिक प्रवचन माला भाग-12	80.00
64.	मानव कल्याण की चर्चाएं	50.00
65.	प्रभु-दर्शन	50.00
*66.	यौगिक प्रवचन माला भाग-13	80.00
67.	समाज उत्थान का मार्ग	50.00
*68.	यौगिक प्रवचन माला भाग-14	80.00
*69.	ब्रह्म की ओर	50.00
70.	ईश्वर मिलन	50.00
71.	यौगिक प्रवचन माला भाग-15	80.00

*सहजिल्द का मूल्य 20 रु. अतिरिक्त है।

पुस्तक प्राप्ति के स्थान

योगनिष्ठ पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज की अमृतवाणी का साहित्य सँहिता, कैसेट्स, सी. डी. व डी. वी. डी. के रूप में निम्न स्थानों पर उपलब्ध हैः—

1. श्री महानन्द संस्कृत महाविद्यालय, लाक्षागृह, बरनावा, जिला—बागपत, (उ.प्र.)। मोबाइल नं 09719622950
2. श्री गुरुवचन शास्त्री, मकान नं. 165/30ए, दक्षिण भोपा रोड़, निकट माढ़ी की धर्मशाला, नई मण्डी, मुजफ्फरनगर (उ. प्र.)। मोबाइल नं. 09412888050
3. सुश्री. नीरू अबरोल, के-3 लाजपत नगर-3, नई दिल्ली। दूरभाष नं. 011-41721294
4. डॉ. मधुसूदनेश्वर प्रकाश, A-59 पंचशील एन्क्लेव नई दिल्ली-110017 दूरभाष नं. 011-41030481
5. श्री जितेन्द्र चौधरी, ए-84, मालवीय नगर, नई दिल्ली-110017, मो. नं. 9811707343
6. श्री अनिल त्यागी, सी-47 रामप्रस्थ, गाजियाबाद (उ.प्र.)। दूरभाष नं. 0120-4165802
7. श्री आशीष त्यागी, डी-293, रामप्रस्थ, पोस्ट ऑफिस चन्द्रनगर, गाजियाबाद पिन कोड-201011 (उ.प्र.)। दूरभाष नं. 0120-2642052
8. श्री लोमश त्यागी, 106/4 पंचशील कालोनी गढ़ रोड़, मेरठ, (उ.प्र.) मोबाइल नं. 09410452076
9. श्री विवेक त्यागी, 16ए, अशोक कॉलोनी, अल्कापुरी, हापुड, (उ.प्र.)। दूरभाष नं. 0122-2316196
10. श्री संजीव त्यागी, 1107, सैक्टर-3, बल्लभगढ़, फरीदाबाद हरियाणा। मोबाइल नं. 09910589486
11. मैं. हर्ष मेडिकोज, ए-2/31, सैक्टर-110—मार्किट नोएडा, फेस-2, (उ.प्र.) मोबाइल नं. 9899228860, 9871367937
12. श्रीमती बाला, 251, दिल्ली गेट, नई दिल्ली। दूरभाष नं. 011-23282088
13. डॉ. अशोक कुमार आर्य, आर्यावर्त कालोनी निकट मुरादाबादी गेट, अमरोहा, जिला-जे.पी. नगर (उ.प्र.) मोबाइल नं. 09412139333
14. श्री सुमन कुमार शर्मा, जे-380, सैक्टर बीटा-2, ग्रेटर नोएडा, (उ.प्र.) मोबाइल नं. 09313530505
15. श्री सतीश भारद्वाज, ग्राम बहेडी, रोहाना मिल, जिला मुजफ्फरनगर (उ.प्र.)।
16. मैं. विजय कुमार, गोविन्द राम हासानन्द, 4408, नई सड़क, दिल्ली। दूरभाष नं. 011-23977216

मासिक सहयोग

श्री हरीराम गुप्ता, केसर स्टील, वजीरपुर, दिल्ली	1000 रुपये
श्री चिंतामणि त्यागी एवं श्री जगमोहन त्यागी बरला, मुजफ्फरनगर	1000 रुपये
श्री संजीव त्यागी (दिनकरपुर) फरीदाबाद, हरियाणा	1000 रुपये
श्री अरुण त्यागी, राजनगर, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश	500 रुपये
श्री विनोद त्यागी सुपुत्र श्री जयप्रकाश त्यागी मकनपुर, गाजियाबाद	500 रुपये
मा. कार्तिक त्यागी सुपौत्र श्री रामनिवास त्यागी ग्राम भंगेल, नोएडा	251 रुपये
मा. लोमश त्यागी सुपौत्र श्री रामनिवास त्यागी ग्राम भंगेल, नोएडा	251 रुपये
डॉ. शुचि, डॉ. राजीव चावला, आणद, गुजरात	250 रुपये
श्री राकेश शर्मा, विराट नगर, पानीपत, हरियाणा	250 रुपये
श्री कृष्ण लाल बत्रा, इन्द्री, जिला करनाल	201 रुपये
मास्टर कवन्धि, रामप्रस्थ, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश	101 रुपये
मास्टर सिद्धार्थ, अँकुर अपार्टमैन्ट, दिल्ली	101 रुपये
मास्टर अभ्युदय त्यागी, न्यू जर्सी, अमेरिका	101 रुपये

नम्र-निवेदन

पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज ने अपने प्रवचनों में वेदमन्त्रों का गान करते हुए उनकी प्रचलित भाषा में व्याख्या की है। उसी अमृत वाणी को जनकल्याण के लिए ''सँहिता'' के रूप में प्रकाशित करने के लिए वैदिक अनुसन्धान समिति सभी श्रद्धालु एवम् दानदाताओं से सहयोग के लिए आह्वान करती है जिससे कि प्रकाशन का कार्य सुचारू रूप से ऊर्ध्वा गति को प्राप्त होता रहे। सहयोग की राशि समिति के बैंक खाते में स्वेच्छानुसार भेजने के लिए बैंक का विवरण निम्न प्रकार से है :-

वैदिक अनुसन्धान समिति (पञ्जी.)

पंजाब नैशनल बैंक, खान मार्केट, नई दिल्ली

बैंक खाता नं. - 0149000100229389, IFSC Code – PUNB–0014900

website : www.shringirishi.in

Email : contact@shringirishi.in

॥ ओ३म् ॥

7वां चतुर्वेद ब्रह्म पारायण महायज्ञ

सोमवार 17 अक्टूबर, 2016 से 23 अक्टूबर, 2016 तक

परमपिता परमात्मा की असीम अनुकम्पा से एवं पूज्यपाद गुरुदेव **ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी** महाराज की पावमानी प्रेरणा से गुरुकुल लाक्षागृह, बागपत के तत्वावधान में गत वर्षों की भाँति इस वर्ष भी **श्री शिव मन्दिर ग्राम दान्दुपुर निकट फलावदा, मेरठ** के प्रांगण में चतुर्वेद ब्रह्म पारायण महायज्ञ अत्यन्त हर्ष के साथ आयोजित किया जा रहा है। आप परिवार के इष्ट मित्रों सहित सादर आमंत्रित हैं। कृपया पधारकर यज्ञाहुति प्रदान कर एवं तन, मन, धन का सहयोग देकर, पुण्य के भागी बनें।

यज्ञ के ब्रह्मा : आचार्य गुरुवचन शास्त्री, गुरुकुल लाक्षागृह, बरनावा, बागपत
आचार्य–योगाचार्य अरविन्द शास्त्री, गुरुकुल लाक्षागृह, बरनावा, बागपत

विस्तृत कार्यक्रम

17 अक्टूबर से 23 अक्टूबर, 2016

प्रातः 6:15 बजे	:	ओ३म् ध्वजारोहण के साथ महायज्ञ का उद्घाटन (केवल प्रथम दिन)
प्रातः 6:30 बजे	:	ब्रह्मयज्ञ (सन्ध्या) प्रतिदिवस
प्रातः 7:00 से 10:00 तक	:	चतुर्वेद ब्रह्म पारायण महायज्ञ एवं वेदोपदेश
प्रातः 11:00 से 1:00 तक	:	भोजन एवं भजनोपदेश
सायः 3:00 से 6:00 तक	:	चतुर्वेद ब्रह्म पारायण महायज्ञ एवं वेदोपदेश

पूर्णाहुति प्रातः 9 बजे रविवार 23 अक्टूबर, 2016

अयोजक एवं निवेदक

समस्त ग्रामवासी ग्राम दान्दुपुर निकट फलावदा, मेरठ

योगमुद्रा में प्रवचन करते हुए पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज

उद्‌बोधन

प्रत्येक मानव, प्रत्येक देव कन्या आनन्द को चाहता है, सुख को चाहता है परन्तु यह सुख कहाँ प्राप्त होता है? सुख हमें उसी काल में मिलता है जब हम सुख स्वरूप प्रभु को जान लेते हैं, ज्ञानमय आनन्द को जान लेते हैं, जिस ज्ञान-विज्ञान की महिमा को गाते हुए हमारे ऋषि-मुनियों ने भिन्न-भिन्न रूपों में अनेक अलंकारों में उस परमात्मा को अङ्कित किया। आज हमें परमपिता परमात्मा को अपने हृदय में अङ्कित कर लेना है, उस परमात्मन् इन्द्र को कल्याणकारी जान करके अपने मानवत्व को पवित्र बना लेना है।

हे परमात्मन्! तू कल्याण कर हमें ज्ञान और विज्ञान के शिखर पर ले जा।

पूज्यपाद-गुरुदेव